ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

उत्सोदेव हिरण्ययः। अथर्ववेद 20/118/2

हे सकल एश्वर्यदाता! तू सम्पत्ति का झरना है।

O The Bistower of wealth ! you are fountain head of all riches. You are the source that provides us all the wealth & jewels.

वर्ष 36, अंक 43 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 23 सितम्बर, 2013 से रविवार 29 सितम्बर, 2013 तक
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली देहात के औचन्दी ग्राम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

दीवानचन्द स्मारक गोकुल चन्द आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय, औचन्दी का

उद्घाटन समारोह एवं ग्रामीण क्षेत्रीय आर्य सम्मेलन सम्पन्न

देहात क्षेत्र में पहली बार पधारने पर बैंड-बाजे के साथ हुआ महाशय जी का जोरदार स्वागत

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली देहात के औचन्दी ग्राम में दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय गत लगभग 65 वर्षों से न केवल दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्र अपितु निकटवर्ती हरियाणा के ग्रामों की रोग पीड़ित जनता की सेवा करता आ रहा है। समय के साथ-साथ इसका भवन जर्जर हो गया था। सभा अधिकारियों ने इस समय पहले ही पूर्ण हो चुका था किन्तु समयाभाव के कारण इसका उद्घाटन नहीं हो सका था।

अत: रविवार 15 सितम्बर 2013 को इसके औपचारिक उद्घाटन समारोह एवं तीसरे चरण के निर्माण कार्य की आधार शिला एवं ग्रामीण क्षेत्रीय आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया।

उद्घाटन समारोह से पूर्व दिल्ली देहात में पहली बार पधारने पर महाशय धर्मपाल जी का बैंड-बाजे एवं शोभायात्रा के साथ स्वागत किया गया। दिल्ली सभा के एम. डी.एच. वेद प्रचार रथ पर सेवारत् श्री सन्दीप आर्य, श्री हरीश एवं श्री जबर सिंह खारी जी ने अपने सुमधुर भजनों से उपस्थित जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

ग्रामीण क्षेत्र की जरुरतों को समझते हुए चिकित्सालय का स्तर ऊँचा उठाएंगे - महाशय धर्मपाल

वृद्ध आर्य तपस्वियों एवं जीवनदानी कार्यकत्ताओं के निवास एवं उपचार की विशेष व्यवस्था बनाने में लाला दीवानचन्द ट्रस्ट पूर्ण सहयोग करेगा - डॉ. राजेन्द्र गुप्ता

दिल्ली देहात में संचालित चिकित्सालय के मुख्य द्वार पर रिबन काटकर प्रवेश करते एवं पुनर्निर्मित भवन के पत्थर का अनावरण करते महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं दीवानचन्द ट्रस्ट के मन्त्री श्री राजेन्द्र गुप्ता, सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी, बिहार सभा के प्रधान श्री गंगा प्रसाद, सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य एवं अन्य।

निर्माण के तीसरे चरण में ही होगा चिकित्सालय में भव्य यज्ञशाला का निर्माण - धर्मपाल आर्य

ओर विशेष ध्यान दिया और वर्ष 2003 में समस्त आर्यसमाजों, दानी महानुभावों के सहयोग से इसके पुनर्निर्माण एवं आधुनिकीकरण का कार्य आरम्भ किया जो कि चार चरणों में पूरा होना है। इसके निर्माण के दो चरणों - भवन निर्माण एवं योग्य स्टाफ की नियुक्ति का कार्य काफी

कार्यक्रम का शुभारम्भ आर्ष गुरुकुल खेड़ाखुर्द के आचार्य सुधांशु जी के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ से हुआ। जिसमें समस्त क्षेत्रवासियों ने अपनी आहुतियां प्रदान की।

गांव के सबसे बुजुर्ग 93 वर्षीय आर्य महानुभाव का आशीर्वाद प्राप्त करते महाशय धर्मपाल जी - शेष पृष्ठ 5 एवं 8 पर

चिकित्सालय में पहुंचने पर महाशय धर्मपाल जी द्वारा रिबन काटकर एवं लाला दीवानचन्द ट्रस्ट के सचिव डॉ. राजेन्द्र

महिलाओं ने सुमधुर वाणी में गाए हरियाणवी गीत

गुप्ता जी द्वारा नारियल फोड़कर चिकित्सालय के उद्घाटन की घोषणा की गई। अतिथियों के मंचासीन होने के साथ ही ग्रामीण आर्य सम्मेलन का आरम्भ हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. राजेन्द्र गुप्ता एवं आशीर्वाद सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी ने प्रदान किया तथा

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

'एक शाम शहीदों के नाम'

2 अक्तूबर, 2013 : सायं 3 बजे से

स्थान : आर्यसमाज मिण्टो रोड, डीडीयू मार्ग, नई दिल्ली-2

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं एवं शहीदों को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करें

निवेदक जगबीर सिंह (संचालक) बृहस्पति आर्य (महामन्त्री)

दयानन्द मठ, दीनानगर की स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण होने पर

हीरक जयन्ती समारोह : 18-20 अक्तूबर, 13

समारोह के मुख्य आकर्षण

ध्यान एवं योग साधना, ध्वजारोहण, वेद सम्मेलन, संस्कृत एवं संस्कृति सम्मेलन, स्त्री सम्मेलन, युवा सम्मेलन, शोभा यात्रा, संध्या यज्ञ भजन एवं प्रवचन, संगीतमय आर्य सिद्धान्त सम्मेलन, एवं आर्य महासम्मेलन।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधाकर समारोह को सफल बनाएं

निवेदक : स्वामी सदानन्द सरस्वती, अध्यक्ष, मो. 9478256272

वेद-स्वाध्याय

बल के धारक प्राण

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

असुनीते मनो अस्मासु धारय जीवातवे सु प्र तिरा न आयुः। रारन्धि नः सूर्यस्य संदृशि घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व।। ऋग्वेद 10/59/5

अर्थ—**(असुनीते)** हे प्राणशक्ति प्रदान करने वाले आचार्य **(अस्मासु)** हममें **(मनः)** मन को **(धारय)** स्थिर कर **(जीवातवे)** जीने के लिये **(नः)** हमारी **(आयुः)** आयु की **(सु प्रतिर)** वृद्धि करो **(नः)** हमें **(सूर्यस्य)** सूर्य के **(सन्दृशि)** समान तेजस्वी **(रारन्धि)** बनाओ **(त्वम्)** तुम **(घृतेन)** घृत द्वारा **(तन्वम्)** शरीर को **(वर्धयस्व)** बढ़ाने का उपाय बताओ।

हे योग-विद्या के जानने वाले आचार्य! आप **असुनीति** अर्थात् प्राणों की विद्या को जानते हैं। हमने साधक लोगों से सुना है कि प्राणायाम का अभ्यास योग्य गुरुजनों के मार्गदर्शन में ही करना चाहिये अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि की अधिक सम्भावना रहती है। योगी स्वात्माराम कहते हैं—

चले वाते चलं चित्तं निश्चले निश्चलं भवेत्। योगी स्थाणुत्वमाप्नोति ततो वायुं निरोधयेत्॥ हठ० २.२॥

श्वास-प्रश्वास के चञ्चल होने पर चित्त भी चञ्चल होता है और प्राणायाम से प्राण का अवरोध करने पर मन भी स्थिर हो जाता है। मन के स्थिर हो जाने पर योगी को धारणा-ध्यान का अभ्यास करने में सुगमता हो जाती है, इसलिये प्राणायाम का अभ्यास करना आवश्यक है। जिसे-**गुरूपदिष्टमार्गेण प्राणाया मान्समभ्यसेत्** (हठ० २.१) आसन के दृढ़ हो जाने पर योग्य गुरु से प्राणायाम सीखना चाहिये। ठीक विधि से न किया गया प्राणायाम वायु का प्रकोपक, हिक्का, श्वास, कास, शिर और कान में पीड़ा उत्पन्न कर देता है। प्राणायाम के अभ्यास में घृत-दुग्ध का सेवन करना आवश्यक है अन्यथा रूक्षता उत्पन्न हो जाती है। अभ्यास के दृढ़ हो जाने पर घृत-दुग्ध न मिले तब भी चला जा सकता है। विधिपूर्वक किया गया प्राणायाम सभी रोगों को दूर करता है। इसीलिये **जीवातवे सुप्रतिरा न आयुः** जीने के लिये हमारी आयु की वृद्धि कीजिये। प्राणायाम से रोगों का निवारण हो दीर्घ आयु की प्राप्ति होती है। यद्यपि आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य रूप तीन स्तम्भ शरीर रूप भवन को स्थिर रखने के लिये आयुर्वेद में कहे हैं। प्राणायाम इन तीनों स्तम्भों को बल प्रदान करता है। प्राणायाम से जठराग्नि प्रदीप्त हो भोजन का पाचन ठीक प्रकार से होता है। मन के शान्त होने से निद्रा भी समय पर आती है और ब्रह्मचर्य के लिये तो प्राणायाम अमोघ अस्त्र है ही।

प्राणायाम के अभ्यास से **रारन्धि नः सूर्यस्य संदृशि** हमें सूर्य के समान तेजस्वी बनाइये। महर्षि पतञ्जलि ने भी इसकी पुष्टि करते हुये कहा है—**तत क्षीयते प्रकाशावरणम्** (योग० २.५२) प्राणायाम से बुद्धि पर छाया अज्ञान का आवरण छंट जाता है और अविद्यादि क्लेश क्षीण हो जाते हैं। बुद्धि का आवरण हट जाने से वह विवेक ज्ञान से प्रकाशित हो जाती है। इसके अतिरिक्त रक्त शुद्ध हो मुखमण्डल चमकने लगता है।

जहाँ प्राणायाम से मन शान्त और बुद्धि निर्मल हो मुखमण्डल तेजस्वी बन जाता है वहाँ शरीर की वृद्धि में भी प्राणायाम सहायक है यह बतलाते हुये कहा है **घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व** यह प्राणायाम शरीर की वृद्धि करे। शरीर की वृद्धि घृत-दुग्धादि पौष्टिक पदार्थों के सेवन से होती है। ये पदार्थ तभी पुष्टि करते हैं जब पाचन शक्ति उन्हें पचाकर शरीर का अंग बना दे। बाह्य प्राणायाम, सूर्य भेदी-उज्जायी भस्त्रिका प्राणायाम पाचन शक्ति को बढ़ाने वाले हैं।

गलग्रन्थि (टान्सिल) के बढ़ जाने पर शरीर की वृद्धि रुक जाती है। इसी भाँति चुल्लिका ग्रन्थि (थायरॉयड) और पिच्यूटरी ग्रन्थि के स्राव जब अल्प मात्रा में स्रवित होते हैं तब भी शरीर का विकास समुचित रूप में नहीं होता। प्राणायाम से चुल्लिका ग्रन्थि सक्रिय हो उससे स्रवित रस शरीर की वृद्धि में सहायक होता है। पिच्यूटरी ग्रन्थि पर प्राणायाम का सीधा प्रभाव तो नहीं पड़ता परन्तु मन शान्त हो जाने से इस ग्रन्थि से स्रवित रस शरीर की अनेक क्रियाओं को व्यवस्थित रखते हैं।

असुनीति का अभिप्राय प्राणविद्या को जानने वाले से है। जैसे पुनर्जन्म में फिर से प्राणों का सञ्चार पञ्चतत्त्वों द्वारा होता है वैसे ही योग्य प्राणविद् गुरु निर्बल, निस्तेज हुये को प्राणविद्या प्राप्त करा उसे तेजस्वी बना देता है यह आगे बतलाया है—

पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्। पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां या स्वस्तिः।। ऋ. 5/59/7

पुनर्जन्म या निर्बल हुये व्यक्ति को पृथिवी (पार्थिव अन्नादि पदार्थ) शक्ति प्रदान करें। **अन्नं प्राण उच्यते** अन्न को प्राण कहते हैं। प्राणों को पुष्टि देने वाले खाद्य-पदार्थों का उचित मात्रा में सेवन करने से प्राणशक्ति बढ़ती है। द्यु अर्थात् सूर्य प्राण प्रदान करे। सूर्य ही प्राण का आदि स्रोत है। उसकी किरणों में सन्निहित प्राणशक्ति बादलों में स्थित जल को प्राणशक्ति से भर देती है। यही जल भूमि पर गिर औषधियों और अन्नों को प्राण से आपूरित कर देता है। प्राणशक्ति को प्राप्त करने के लिये प्रातःकाल सूर्य के प्रकाश को खुले शरीर पर लेना आरोग्य एवं स्फूर्ति प्रदान करता है।

अन्तरिक्ष से अभिप्राय वहाँ स्थित वायु से है। वायु का आक्सीजन जीवनदाता है। खुली वायु में प्रातःकाल व्यायाम, दीर्घ श्वसन और प्राणायाम करने से श्वसन तन्त्र सक्रिय होकर अगले चौबीस घण्टों तक दीर्घ श्वसन करता रहता है जिसके कारण हमारे रक्त की शुद्धि और कोशिकाओं को आक्सीजन की आपूर्ति होती रहती है।

सोम का अर्थ सौम्य गुण युक्त पदार्थ चन्द्रमा और वीर्य ये तीनों ही प्राणशक्ति को देने वाले हैं। इनमें भी ब्रह्मचर्य का पालन करना महत्त्वपूर्ण माना गया है।

परमात्मा भूः प्राणों का भी प्राण है। पुनर्जन्म में वही जीवात्मा को प्राणशक्ति प्रदान करता है और जो उसकी उपासना करता है उसे भी वह प्राण-अर्थात् उत्साह, स्फूर्ति, आनन्द से भर देता है। हे आचार्य! आपकी कृपा और मार्गदर्शन में हम सब शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का बल बढ़ाकर स्वर्गापवर्ग दोनों की प्राप्ति करें।

- क्रमशः

उत्तराखण्ड बाढ़पीड़ितों की सहायतार्थ तन-मन-धन से सहयोग करें आर्यजन

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिस बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके **aryasabha@yahoo.com** तथा **dapsvijayarya@gmail.com** पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य** को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

– विनय आर्य, महामन्त्री

ब्रेल लिपि में महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/-रु.

आर्यजन अपनी आर्यसमाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।

-: प्राप्ति स्थान :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

आवश्यकता

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्यूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

धर्म के नाम पर बढ़ता अधर्म – क्यों?

– प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

आज एक नहीं अनेकों बार इस प्रकार की घटनाएं समाचार पत्रों और मीडिया के माध्यम से प्राप्त हो रही हैं कि अमुक धार्मिक व्यक्ति अथवा संस्था के द्वारा यह निन्दनीय पाप कर्म घटित कर दिया, साधु के भेष में एक अपराधी पकड़ा गया। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट की एक टिप्पणी भी आई जिसमें कहा है कि गलत कार्य करने वाले, स्मगलिंग करने वाले और अनेक ऐसे व्यक्ति जिनकी दिनचर्या और आचरण धर्म के विरुद्ध है, नैतिकता के खिलाफ है उन लोगों की भी भारी संख्या सामाजिक राष्ट्रीय और आध्यात्मिक क्षेत्र में पायी जाती है वे धर्म के नाम पर वे आश्रय पाते हैं।

सूक्ष्मता से इस पर दृष्टिपात करें, तो यह टिप्पणी बहुत ही सटीक और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज का सही स्वरूप है। आखिर ऐसा क्यों होता है? क्यों इस प्रकार के पाप और निन्दनीय कर्म धर्म से जुड़ी संस्था या व्यक्तियों के द्वारा किये जा रहे हैं। इनकी पृष्ठभूमि में देखेंगे तो उसके दो प्रमुख कारण हैं। पहला है अज्ञानता और इसी का दूसरा रूप है अन्धविश्वास और अन्धश्रद्धा।

आज टीवी, समाचार पत्र, सब ओर एक ही चर्चा है आसाराम। यहां बात केवल आसाराम जी की नहीं है इसी प्रकार कुछ दिन पूर्व रामपाल नामक व्यक्ति का भी जो बहुत पूजनीय सन्त कहाते थे उनके आश्रम में पुलिस छापे में अनेक प्रकार की अश्लीलता की सामग्री, अपार धन, महिलाओं के मंगल सूत्र आदि पाए गए थे। ऐसे न जाने कितने व्यक्ति हैं जिनकी दिनचर्या आपत्तिजनक है वे, धर्म का चोला पहनकर शोषण व पाप कर्मों में लिप्त हैं।

भोली-भाली जनता की आध्यात्मिक भावनाओं का लाभ उठाते हुए बिना स्वाध्याय, तपस्या, ज्ञान संयम को अपनाते हुए अनेक व्यक्ति सिद्ध पुरुष बनकर पूजा करवा रहे हैं।

यह सर्वविदित है कि कोई भी अपने नाम के आगे वकील, डॉक्टर या इन्जीनियर लिखने के लिए उस विषय की पढ़ाई करके उसकी उपाधि प्राप्त करना जरुरी है, उपाधि मिलने पर तभी अपने नाम के आगे उस उपाधि का उल्लेख कर सकते हैं।

किन्तु धर्म के क्षेत्र में एक अनपढ़, वेद, उपनिषद्, शास्त्रों, आर्ष ग्रंथों का अध्ययन किए बिना ही जीवन में जिनकी कोई तपस्या नहीं उनमें से अनेक आज अपने नाम के आगे पण्डित, सन्त, महात्मा, आचार्य, शास्त्री, श्रीश्री1008 आदि प्रतिष्ठा के लिए, बिना किसी योग्यता के लिख रहे हैं। इन्हें कौन रोकेगा? ये उपाधि तो मनुष्य को ज्ञान, गुण, कर्म, आचरण, स्वभाव से प्राप्त होती है।

ज्ञान न होने के कारण किसी भी व्यक्ति को जिसने पहले सोना नहीं देखा हो वह पीतल को भी सोना मानने का भ्रम पाल सकता है। क्योंकि सोना और चमकता हुआ पीतल लगभग समान रूप से दिखाई देते हैं। किन्तु जिसे सोने की परख है वह कसौटी पर परख कर उसके असली या नकली होने का पता लगा लेता है। ऐसे व्यक्ति की पहचान उसके व्यवहार, ज्ञान व आचरण से होती है। विद्वान और पण्डित वही कहलाता है जिसे आत्मोत्थान का ज्ञान हो और उसी के अनुरूप उसका स्वयं का आचरण हो। धर्म पालन संयमित जीवन जो अन्त:करण से होता है, उसकी पवित्रता, शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म और शुद्ध उपासना से होती है। धर्म आचरण का विषय है। इसलिए कहा – **आचार: परमोधर्म:** मानवीय आचार को परम धर्म कहा गया है। यहां आचार से तात्पर्य मनुष्य के विचार, खान-पान, रहन सहन, पवित्र कर्म और आचरण से है। जिस जीवन में पवित्रता है, वही श्रेष्ठ आचरण और आचार कहलाता है।

दुर्भाग्य से समाज में इन सबको परखने की कसौटी जिससे हो सकती है उस स्वाध्याय को त्याग दिया है। स्वाध्याय से मनुष्य को जीवन कर्त्तव्य लक्ष्य और धर्म परायणता के सूत्र समझ में आते हैं। मनुष्य का श्रेष्ठ जीवन कैसा हो, विद्वान व ज्ञानी धार्मिक कैसा होना चाहिए आदि बातों का ज्ञान स्वाध्याय से होता है। ज्ञानार्जन का दूसरा साधन है सत्संग। जिसके अन्तर्गत कथा, प्रवचन, व्याख्यान आदि आते हैं, और मनुष्य का सत्य से संग हो जाता है। जीवन में क्या असत्य है क्या त्यागने योग्य है और क्या सत्य है क्या आचरण में अपनाने योग्य है इनका बोध होता है जिससे सही रूप में मनुष्य को जीने की राह जिसमें दिखाई देती है। आत्मोन्नति के साधन जिसके माध्यम से समाज तक पहुंचते है। शुभ और अशुभ कर्मों और उनके फल का ज्ञान सत्संग से होता है। कुल मिलाकर सत्संग जीवन उन्नति का एक साधन होता है। इसीलिए महाभारत में सबकुछ त्यागकर भी सदैव सत्संग करने का सन्देश दिया और कहा गया –

सत्संग परमं तीर्थम् सत्संग परमं पदं।
तस्मात्सर्वं परित्यज्य सत्संग सततं कुरू।।

इसमें सत्संग को तीर्थ कहा है। तीर्थ का अर्थ जल स्नान नहीं, तीर्थ का अर्थ जिससे मनुष्य जन्म सफल हो जाये। यह सफल होने का मार्ग सत्संग से प्राप्त होता है।

सत्संग में ऊपरी चमक-दमक, व्यवस्था, आकर्षण, सजावट, साज सज्जा गौण है उसमें ज्ञान प्रधान है। प्राय: उसके साथ ही में ज्ञान देने वाले का आचरण और भी महत्त्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से समाज में आज सत्संग का जो उद्देश्य था वह मिट गया, समाज दर्शन से भटक गए और प्रदर्शन को ही सब कुछ मान बैठा है। इसलिए ऐसे आयोजनों में मनोरंजन और भीड़ तो है परन्तु ज्ञानमय सन्देश नहीं।

अध्यात्म की चर्चा गंभीर सत्य मार्ग से जीवन शैली प्रदान करने वाली जीवन में सद्गुणों को धारण करने की प्रेरणा देने वाली होना चाहिए। किन्तु उसका स्थान आज साज सज्जा, कथा वाचक की ड्रेस, उसका नाटकीय उद्बोधन, तरह-तरह के मनोरंजन पूर्ण वातावरण और साधन निर्मित करना रह गया है। भौतिक रूप से बाहरी दिखावें को ही हमने उपलब्धि और आदर्श जबसे मानना प्रारम्भ किया तब से ही धोखा खाना प्रारम्भ हुआ। माता सीता का हरण भी ऊपर से साधु दिखने वाले रावण ने ही किया था। ऊपर से साधु वेश देखकर ही माता सीता ने उस पर सज्जन व्यक्ति होने का विश्वास कर लिया था जिसकी परिणिती दु:खद हुई।

ठीक वही स्थिति आज समाज की है। समाज बाहरी वेशभूषा, बड़ी संख्या में भक्तों की उपस्थिति, रहने के आलीशान तौर तरीकों से प्रभावित होती है। कण्ठी, माला, तिलक, दाढ़ी, खड़ाऊ, कमण्डल यह हमने साधु और सन्त की पहचान मान लिया। इसी कारण इन्हें अपनाकर कई बहरूपिए, अपराधी प्रवृत्ति के व्यक्ति नैतिकता से गिरे हुए भी धर्म के नाम व्यापार करने वाले ठग इस भेष में छिपकर अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगे हुए हैं।

तथाकथित विचारधारा ने मानसिक रूप से हमें पंगू बना दिया। धर्म व गुरू के नाम पर हमें मूकदर्शक बने रहने का पाठ पढ़ा दिया। तर्क बुद्धि का उपयोग नास्तिकता की पहचान बताकर भेड़चाल चलने को महत्त्व दिया गया। परिणाम स्वरूप पाखण्ड से घिर गए और हम श्रद्धा में नहीं अन्ध श्रद्धा में ही धर्म, ईश्वर और सन्त महापुरुषों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। ज्ञानविहीन मान्यता, आस्था, लगाव समर्पण श्रद्धा नहीं होता वह अन्ध श्रद्धा होती है। श्रद्धा तो वह है जो सत्य हो और उस सत्य को जानकर उसे धारण किया जाए। किन्तु समाज के लोग धर्म ईश्वर और सन्त महात्माओं गुरूओं के प्रति आस्था भावना समर्पण से अधिक जुड़े हैं, उनकी पहचान, सही उनके सद्गुणों, सद् आचरणों के कारण उनसे जुड़ने वालों की संख्या नगण्य-सी है। मनुष्य को किसी सही निर्णय और उसका सही परिणाम प्राप्त करने के लिए दिल और दिमाग दोनों की आवश्यकता होती है। केवल भावनाओं के प्रवाह में लिए निर्णय हानिकारक या निष्फल होते हैं। आज अध्यात्म और मजहब सम्प्रदाय के नाम पर ऐसा ही कुछ हो रहा है भावनाओं के वशीभूत होकर अधर्म करे भी धर्म मानकर कर रहे हैं और उसी की परिणिती है अयोग्य व्यक्तियों का समाज पूजन कर रहा है उन्हें ईश्वर के समकक्ष मान रहा है, और बड़ी भीड़ देखकर बिना सोचे समझे मानव भेड़चाल चलता हुआ उसका अनुसरण कर रहा है।

वर्तमान समय में बहुचर्चित यह एक काण्ड की क्या कहें, ऐसे अनेकों काण्ड होते आए हैं और जब तक समाज स्वाध्यायशील सत्य-असत्य के भेद को समझने की योग्यता नहीं रखेगा भौतिक साधनों और दिखावे की चकाचौंध से दूर हटकर सही धर्म से नहीं जुडेगा तब तक ऐसा ही होता रहेगा। कहते हैं जब तक दुनिया में मूर्ख हैं, तब तक चालाक भूखे नहीं रहेंगे।

इन सबके पीछे मूल कारण हमारा अपरिपक्व ज्ञान व अज्ञानता ही है। कुछ स्वार्थी लोगों ने इसी प्रकार की अनेक ऐसी बातें जो मानव जीवन के व्यवहार के विपरीत है उसे धर्म के रूप में समाज के सामने स्थापित किया और समाज अन्धानुकरण करते हुए उसे कोरी आस्था के नाम पर मानने लगा। उदाहरण के लिए संसार का कोई भी व्यक्ति शराब, मांस गांजा, भांग, चरस पदार्थों का सेवन उचित नहीं मानता। किसी परायी स्त्री के साथ रमण करना उसे पत्नी के समान लेकर घूमना निन्दनीय माना जाता है, किन्तु अन्ध श्रद्धा में डूबे समाज ने इन सब निन्दनीय कार्यों पर विचार नहीं किया कि जब एक साधारण व्यक्ति भी इन बातों को गलत मानता है तो फिर एक देव या महापुरुष जिसे सनातन धर्मी पूजते हैं भगवान मानते हैं, वह ऐसे दुष्कर्मों को क्यों करेंगे? क्या उनके द्वारा इन पाप व त्याज्य कर्मों को करने से वे श्रेष्ठ हो जाते हैं?

अज्ञान व अन्ध श्रद्धा से शराब भैरव को चढ़ा दी, गांजा-भांग चरस के साथ शिवजी को जोड़ दिया, मांस के साथ में काली को जोड़ दिया और अपनी पत्नी रूक्मिणी को छोड़ कृष्ण की जोड़ी राधा के साथ बना दी। जबकि राधा तो कृष्ण की मामी थी यशोधरा के भाई रायण की पत्नी थी तथा कृष्ण से बहुत बड़ी थी। किन्तु अन्धश्रद्धा के कारण हमने इस पवित्र रिश्ते के साथ राधा-कृष्ण के अनैतिक सम्बन्ध जोड़ दिए जिसका उल्लेख ब्रह्मवैवर्त पुराण में किया गया है। जो कृष्ण और राधा के गिरे हुए चरित्र की पराकाष्ठा है। इस कारण राधा-कृष्ण को आधार बनाकर ही रासलीला का अनेक पाखण्डी स्वांग रचते हैं और उनके यौन शोषण को इससे प्रोत्साहन मिलता है। इसी प्रकार गांजा-भांग, मांस और शराब का सेवन भी देवताओं द्वारा करने की गलत मान्यताओं के कारण समाज में व्याप्त हो

– शेष पृष्ठ 6 पर

"पितरो का वास्तविक श्राद्ध-तर्पण एवं जीवितों की सुसेवा"

- आचार्य रामज्ञानी आर्य

आश्विन मास का कृष्ण पक्ष पित्रपक्ष कहलाता है। इस पक्ष में पौराणिक वर्ग भोजन वस्त्र देकर मृतकों के श्राद्ध एवं तर्पण कर आत्मसंतुष्टि का जो स्वांग रचते हैं उनके ज्ञान लोचन के लिए, यह आवश्यक है कि हम लोग वैदिक दृष्टिकोण की वास्तविकता को समझें।

सर्वप्रथम अन्त्येष्टि संस्कार, श्राद्ध एवं तर्पण पर विचार करेंगे। मरने वाला व्यक्ति तो इस संसार से चला गया वह तो "**यथा कर्मम् तथा श्रुतम्**" ज्ञान व कर्म के अनुसार मोक्ष की स्थिति को या अन्य किसी योनि को प्राप्त करेगा परन्तु उसका जो पड़ा हुआ मृत शरीर है उसको संस्कारित करना होता है। अत: अन्त्येष्टि कर्म, उसको कहते हैं, जो शरीर का अन्तिम संस्कार है। उसके आगे मृत शरीर के लिए कोई भी अन्य संस्कार नहीं है। "**भस्मान्तग्वम् शरीरम्**"। यजु. 40/15 यह स्पष्ट हो चुका है कि दाह कर्म और अस्थि संचयन से पृथक् मृतक के लिए कोई दूसरा कर्म नहीं है। इसलिए दाह कर्म करना ही सर्वोत्तम है।

श्राद्ध करना चाहिए या नहीं? यह प्रश्न सदा आता रहता है कि श्राद्ध करना चाहिए। जीवित माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, गुरुजनों, एवं विद्वान लोगों की अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक सेवा करनी चाहिए इसी का नाम श्राद्ध है। 'पितर' कौन हैं? इस पर जरा सोचें-पाक्षणे धातु से पितर शब्द सिद्ध होता है जिसका अर्थ है-पालक, रक्षक और पिता। पिता और पितर दोनों सामानार्थक हैं किन्तु जीवित माता-पिता ही पालन और रक्षा कर सकते हैं। अत: मृतकों को पितर संज्ञा मानना सर्वथा भूल है क्योंकि रक्षा कार्य मृतकों द्वारा असम्भव है। पिता और पितर का का प्रयोग शास्त्रों में जीवित के लिए आया है। ब्र.पु. में भी बताया गया है कि विद्या देने वाला, अन्न देने वाला, जन्म देने वाला, कन्या देनेवाला, रक्षा करने वाला और अग्रज ये सब पितर कहे जाते हैं। गीता में भी आया है कि अर्जुन ने युद्ध क्षेत्र में खड़े पितर की संज्ञा दी गयी है। किसी पितर को जमीन में दबा देना कोई पुण्य काम नहीं है परन्तु मृतक शरीर को दबाना ही लोग पुण्य समझते हैं। आत्मा को तो सभी अविनाशी मानते हैं सभी जीव अपना कर्मफल भोगने के लिए संसार क्षेत्र में आते हैं। जो जैसा करेगा वैसा पायेगा। किये हुए कर्म का फल निश्चित रूप से भोगना पड़ता है। क्योंकि कहा गया है-"**अवश्यमेव भोक्तव्यमकृतम् कर्मम् शुभाशुभम्**"।। पितर संज्ञा किनको? पितर शब्द का वहुवचन है अत: "**पान्ति रक्षन्तीति पितर:**" इसके अनुसार सभी पितर हुए जो हमारी किसी भी प्रकार की रक्षा करने में समर्थ हैं। पितृपक्ष में पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, मातामही इन तीनों पीढ़ियों के पितरों का ही श्राद्ध करने का विधान है क्योंकि इनसे ही पितर हमें धर्मोपदेश देकर अधर्म आचरण और भौतिक कष्टों से बचा सकते हैं। इससे आगे पितरों का जीवित रह पाना प्राय: संम्भव नहीं है। पितर मृत वंशजों की कोई रूढ़ी संज्ञा नहीं है जैसा कि आजकल समझा जाता है। बल्कि पुत्र ही आगे चलकर पितर कहलाते हैं इस विषय में "**पुत्रासौ यत्र पितरो भवन्ति**"।। यजु. 25/22 का यह मंत्राशं प्रमाण स्वरूप है। वेदों के अनेक मंत्रों में-"**ते आगमन्तु ते इह श्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्**" (यजु. 19/57) **पितर: शुब्धवम्** (यजु. 19/33) पितर इस यज्ञ वेदी पर बैंठे, हमें उपदेश दें, और हमारी रक्षा करें आदि प्रार्थनायें की गयी हैं। ये सब जीवित पितर ही कर सकते हैं। अत: जीवितों का ही श्राद्ध किया जाये मरे हुए का नहीं यही वैदिक परम्परा है। संभवत: तभी ये हमारे वृद्ध जीवित पितर जो पदार्थ जो आसानी से खा सकते है जैसे खीर-पूड़ी, भात और मक्खन आदि कोमल पदार्थ देने की परम्परा आज भी चल रही है। श्राद्ध क्या है? आइये इस पर विचार करें।

'श्रत' सत्य का नाम है। एवं ऋत्सत्यम् ददाति यथा क्रिया सा श्रद्धा। जैसा कि पहले बतलाया गया पितर का अर्थ रक्षा करने वाला है जीवित व्यक्ति ही रक्षा कर सकता है मृत व्यक्ति नहीं। "**तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन् तत्तर्पणम्**"। जिस कर्म से माता-पिता प्रसन्न हो उसी का नाम तर्पण है। जो जीवित के लिये है और उन्हीं के लिये सम्भव है मृतकों के लिये नहीं। शास्त्रों में गृहस्थों के लिये पंचमहायज्ञ दैनिक कर्म बताए गए हैं जिनमें से एक पितृयज्ञ है जिसमें विद्वान, आचार्य, माता-पिता और वृद्ध जनों की सेवा और सत्कार करना है जो जीवित का ही होता है मृतक का नहीं। वेद, शास्त्र, उपनिषद, गीता और महाभारत आदि धर्मग्रन्थों में पुर्नजन्म के अनेक प्रमाण हैं और इससे सम्बन्धित कई सत्य घटनायें प्रकाश में भी आ चुकी है। गीता के अध्याय 2 श्लोक 22 में आया है कि जिस प्रकार पुराने वस्त्रों को छोड़ कर मानव नये वस्त्र धारण करता है उसी प्रकार जीवात्मा पुराने शरीर को छोड़ कर नये शरीर को धारण करता है। इसी प्रकार महाभारत के वनपर्व अ. -183 में भी आया है कि आयु पूरी होने पर जीव इस जर्जर स्थूल शरीर का त्याग करके उसी क्षण किसी दूसरे शरीर में प्रकट होते हैं। अस्तु! जीव एक शरीर का त्याग कर तुरन्त दूसरे शरीर में प्रविष्ट हो जाता है तो मृत माता-पिता आदि पितृपक्ष में भोजन करने कैसे आ सकते हैं? यदि कहिये कि आते हैं तो पितृपक्ष में लाखों घरों में भरना चाहिए क्योकि जब तक नये शरीर व घर को छोड़ेंगे नहीं, जब तक पुराने घरों में भोजन करने कैसे आयेंगे। दूसरी योनि में रहकर भी पूर्व जन्म के माता-पिता आदि को भोजन नहीं पहुँच सकता क्योंकि एक तो यह पता नहीं कि माता-पिता आदि कहां जन्म लिये हैं और दूसरे एक का खाया हुआ भोजन दूसरे के पेट में नहीं जाता। अत: माता-पिता आदि के लिए ब्राह्मणों और कौवों को खिलाने से उन्हें भोजन कदापि नहीं पहुँच सकता। विश्व में जितने महापुरुष हुए हैं उनमें से अद्वितीय समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती एक थे जिनके विचार आज भी प्रासंगिक एवं ग्राह्य। वर्तमान समय में ढोंग, पाखण्ड, अंधविश्वास एवं रूढ़िवादी परम्पराएं चतुर्दिक छाई हुई हैं। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज में व्याप्त सती प्रथा, दहेज, बालविवाह, मूर्तिपूजा, श्राद्ध, पिण्डदान एवं तर्पण आदि जैसी कुप्रथाओं के प्रतिकूल अपना एक अद्वितीय आन्दोलन छेड़ा था। आइये विचार करें तथा "**सत्यमेव जयते नानृतम्**" के उद्घोष को उजागर करें।

- मन्त्री, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्यसमाज लार, देवरिया उ.प्र.- 274502
चलभाष 8574218357/9956326756

शास्त्रों में गृहस्थों के लिये पंचमहायज्ञ दैनिक कर्म बताए गए हैं जिनमें से एक पितृयज्ञ है जिसमें विद्वान, आचार्य, माता-पिता और वृद्ध जनों की सेवा और सत्कार करना है जो जीवित का ही होता है मृतक का नहीं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
द्वारा प्रकाशित
वैदिक विनय
मात्र 125/- रुपये
प्राप्ति हेतु संपर्क करें।
-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

गत अगस्त मास में आसाम के दिमाहसाऊ जिले में राजा गोविन्दचन्द आर्ष गुरुकुलम् की स्थापना की गई। इस अवसर पर गुरुकुल के नामपट्ट का अनावरण करते आर्य प्रतिनिधि सभा उत्कल के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी एवं नव प्रविष्ट बच्चों के साथ अध्यापकगण

रानी गाइडिलु वैदिक छात्रावास, अजाईलुंग कालोनी नागालैंड के कार्यक्रम में सम्बोधित करते आचार्य कोमल जी। साथ में हैं आर्मी कैप्टन एवं स्वामी धर्मानन्द जी। इस आश्रम का संचालन कठिन परिस्थितियों में ब्र. अमित कर रहे हैं।

गुरुकुल खेड़ाखुर्द केआचार्य सुधांशु के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुए यज्ञ में भाग लेते यज्ञमान दम्पति

विशिष्ट अतिथि के रूप में क्षेत्र के निगम पार्षद श्री देवेन्द्र कुमार (पौनी पहलवान) एवं पूर्व निगम पार्षद चौधरी ईश्वर सिंह जी उपस्थित थे। इस अवसर पर महाशय धर्मपाल जी ने इस चिकित्सालय के निर्माण में एक कमरे के सहयोग देने वाले समस्त महानुभावाओं एवं आर्यसमाजों के पदाधिकारियों को ओ३म् का स्मृति चिह्न, माला एवं पीतवस्त्र पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर चिकित्सालय के निर्माण एवं निरन्तर संचालन में सहयोग करने वाले सर्वश्री डॉ. राजेन्द्र गुप्ता, डॉ. एम. के. गौड, मा. गंगाराम, बलदेव राज सेठ, डॉ. चन्द्र मोहन भगत एवं सोमदत्त महाजन जी को विशेष रूप से सम्मानपत्र

प्रदान करके एवं मोती माला, शाल एवं पीतवस्त्र पहना कर स्वागत एवं सम्मानित किया गया।

इस अवसर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित लाला दीवानचन्द ट्रस्ट के मन्त्री डॉ. राजेन्द्र गुप्ता ने कहा कि इस चिकित्सालय के तीसरे चरण में वृद्ध आर्य तपस्वियों, जीवनदानी कार्यकर्त्ताओं के निवास एवं उपचार की विशेष व्यवस्था बनाने में ट्रस्ट पूर्ण सहयोग करेगा।

महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र की आवश्यकताओं को देखते हुए आर्यसमाज के इस चिकित्सालय के स्तर को हर प्रकार से ऊंचा उठाएंगे। उन्होंने

– शेष पृष्ठ 8 पर

समारोह में पधारे अतिथियों का स्वागत एवं सम्मान : डॉ. राजेन्द्र गुप्ता (सचिव लाला दीवानचन्द ट्रस्ट), डॉ. एम. के. गौड़ (निदेशक, दीवानचन्द ट्रस्ट), श्री बलदेव राज सेठ (मन्त्री, चिकित्सालय समिति) साथ में हैं सर्वश्री आचार्य बलदेव, ब्र. राजसिंह आर्य, गंगा प्रसाद, एवं श्री धर्मपाल आर्य

श्रीमती एवं डॉ. चन्द्र मोहन भगत जी का सम्मान

श्री सोमदत्त महाजन जी का सम्मान

आर्यसमाज औचन्दी के प्रधान मा. गंगाराम

पूर्व क्षेत्रीय निगम पार्षद श्री ईश्वर सिंह जी, अध्यक्ष इलनो का स्वागत करते श्री धर्मपाल आर्य एवं सम्बोधन साथ में अन्य क्षेत्रीय निगम पार्षद्

इस अवसर पर लॉयन्स क्लब की ओर से आई कैम्प का भी आयोजन किय गया।

बिहार सभा के प्रधान श्री गंगा प्रसाद जी का स्तागत

समारोह में उपस्थित नई दिल्ली एवं ग्रामीण दिल्ली के क्षेत्रों से पधारे आर्यजन एवं मातृशक्ति की उपस्थिति से भरा पंडाल

उपनयन संस्कार से होता है श्रेष्ठ संस्कारों का प्रारम्भ

श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन) के पावन पर्व पर नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों के उपनयन संस्कार समारोह में गुरुकुल की पुरातन संस्कृति से चलती आ रही परम्परा को गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग में गुरु एवं शिष्य के पवित्र सम्बन्ध को रक्षाबन्धन पर्व पर पवित्र जनेव सूत्र पहनाकर बुरी आदतों को छोड़कर सत्य एवं वैदिक धर्म की दिशा की ओर अग्रसारित करते हुए सुमार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। प्रो. वेदप्रकाश शास्त्री के ब्रह्मत्व में उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ।इस पावन पर्व पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ॰ सुरेन्द्र कुमार जी ने गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग के ब्रह्मचारियों को गुरुकुल परम्परा ब्रह्मचर्य एवं उपनयन संस्कार के बारे में कुछ आदर्श बातों से अवगत कराया एवं '**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमापाघ्नत**' के बारे में बताया। इसी सन्दर्भ में गुरुकुल कांगड़ी के सहायक मुख्याधिष्ठाता जयप्रकाश विद्यालंकार जी ने ब्रह्मचारियों को '**मातृमान पितृमान आचार्यमान पुरुषो वेदः**' के बारे में ब्रह्मचारियों को गुरुत्वों, माता-पिता के शिष्टाचार एवं संस्कार के बारे में बताया। *-आचार्य यशपाल मुख्याधिष्ठाता*

27वां पारिवारिक वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

महिला आर्य समाज देसराज कालोनी पानीपत के तत्त्वावधान में पारिवारिक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन 4 से 11 अगस्त तक आयोजित किया गया। यह आयोजन प्रति वर्ष अलग-अलग 14 परिवारों में किया जाता है जिससे अधिक से अधिक लोग वेद वाणी का श्रवण कर आर्य विचार धारा से लाभ उठा सके। 11 अगस्त को समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ॰ बी॰बी॰ शर्मा (प्राध्यापक आर्य महाविद्यालय) पानीपत ने की।- *निर्मला वसु, प्रधाना*

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का श्रावणी पर्व सम्पन्न

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर में 24 से 28 अगस्त तक अथर्ववेदीय वृहद्यज्ञ के साथ श्रावणी पर्व सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन आचार्य अंकित शास्त्री एवं गौरव शास्त्री के भजन तथा आचार्य कैलाशचन्द्र शास्त्री के वेदोपदेश हुए।

इस अवसर पर दिल्ली के गुरुकुलों के 101 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई।

- सतीश मेहता, मन्त्री

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती निर्वाण शती सम्पन्न

आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत के तत्वावधान में 14 सितम्बर को डीएवीएम पब्लिक स्कूल, सै. 15 सोनीपत में शास्त्रार्थ महारथी, विद्वान लेखक, वीतराग संन्यासी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती जी की निर्वाण शती के अवसर पर स्मृति पर्व का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने की। वैदिक मिशनरी प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु एवं सिद्धान्त मर्मज्ञ पं. रामचन्द्र आर्य ने स्वामी जी के जीवन के पर प्रकाश डाला।- *सुदर्शन आर्य, महामन्त्री*

आर्यसमाज द्वारा कुष्ठ रोगियों को वस्त्र एवं खाद्यान्न वितरण

'मावनता की सेवा में किया जाने वाला हर श्रेष्ठ कार्य यज्ञ है। पीड़ितों की सेवा करना हम सबका कर्त्तव्य है। कुष्ठ रोगी समाज में तिरस्कृत हैं, इन्हें अपना अपनापन देकर इनका सहयोग कर इनके चेहरे पर मुस्कान लाने से मनुष्य को आत्मिक संतुष्टि मिलती है।' ये विचार हरिओम नगर, कोटा स्थित कुष्ठ रोगियों के परिवारों को खाद्य पदार्थ एवं वस्त्र वितरित करते हुए जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढा ने व्यक्त किए। इस अवसर पर सर्वश्री अग्निमित्र शास्त्री, रामप्रसाद याज्ञिक, शोभाराम आर्य, दर्शन पिपलानी, शम्मी कपूर, श्योराज वशिष्ठ, राजीव आर्य आदि भी उपस्थित थे। *- रामप्रसाद याज्ञिक*

आर्यसमाज सै. 3,4,5,6 विजय विहार, रोहिणी का 13वां वार्षिकोत्सव-वेद सम्मेलन

4-6 अक्तूबर, 2013

भजन : श्री प्रताप आर्य

प्रवचन : आचार्य देवकृष्ण दास

पूर्णाहुति एवं वेद सम्मेलन : 6 अक्तूबरे

- सुरेशचन्द्र डोगरा, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल, नई दिल्ली

प्रधान : श्री गोविन्दलाल नागपाल

मन्त्री : श्री चतर सिंह नागर

कोषाध्यक्ष : श्री सुरेन्द्र शास्त्री

मॉरीशस में आर्यसमाज की स्थापना के दस वर्ष बाद मॉरीशस पहुंचने वाले डॉ. चिरंजीवी भारद्वाज के आगमन के 100 वर्ष पूर्ण होने पर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मॉरीशस

5 से 8 दिसम्बर, 2013

स्थान : श्रीमती एल. पी. गोविनरामेन वैदिक केन्द्र युन्यन वेल, त्रुआ बुतिक

विषय : भारतेतर देशों में भारतीय धर्मोपदेशकों का आर्यसमाज के मन्तव्यों के प्रचार प्रसार में योगदान। अधिक जानकारी/भाग लेने के लिए सम्पर्क करें - आर्य सभा मॉरीशस, E-MAIL: ARYAMU@INTNET.MU *हरिदेव रामधनी, महामन्त्री*

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

गुरुकुल हरिपुर, जुनवानी (ओड़िशा) में श्रावणी उपाकर्म के अवसर पर चतुर्थ चतुर्वेद परायण महायज्ञ का शुभारम्भ 21 अगस्त को हुआ। यह महायज्ञ निरन्तर पांच मास तक चलेगा और इसकी पूर्णाहुति 10.11.12 जनवरी 2014 को गुरुकुलीय वार्षिक महोत्सव अवसर पर होगी।

पारायण महायज्ञ के शुभारम्भ अवसर पर दिलीप कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में 35 ब्रह्मचारियों का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार, एक सज्जन का वानप्रस्थ दीक्षा से दीक्षित होना तथा चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। *- आचार्य*

क्या ईश्वर नहीं है? ईश्वर-तत्त्व-विज्ञान शिविर

11-12-13 नवम्बर, 2013

जो महानुभाव भाग लेना चाहते हैं वे अपना बायोडाटा 4 अक्तूबर, 2013 तक भेजकर पंजीकरण करा लेवें। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें -

मन्त्री, श्री वैदिक स्वस्ति पंथा न्यास वेद विज्ञान मन्दिर भागलभीम, भीनमाल, जालौर (राज.) - 343029

मो. 09829148400, 07742419956

E-mai :swamiagnivrat@gmail.com

योग प्रशिक्षण शिविर

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में वानप्रस्थ आश्रम, आर्यवन, रोजड़, में १० से १७ नवम्बर २०१३ तक ८ दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविरार्थी १० नवम्बर को सायंकाल ४ बजे तक शिविर स्थल पर पहुँच जावें। शिविर समापन १७ नवम्बर को मध्याह्न लगभग १ बजे होगा।

शिविर की दिनचर्या प्रातः ४ बजे से रात्रि ९.३० बजे तक रहेगी। अधिक जानकारी के लिए शिविर संयोजक से सम्पर्क करें-

दूरभाष:- 02770-287417, 291555, मो. 9427059550

E-MAIL: VAANAPRASTHAROJAD@GMAIL.COM

आर्य समाज भोजपुर खेड़ी, बिजनौर का शताब्दी समारोह

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद बिजनौर के तत्त्वाधान में शताब्दी महोत्सव 19 से 21 अक्टूबर 2013 को मनाया जायेगा। इस अवसर पर आर्य समाज भोजपुर खेड़ी शताब्दी यात्रा स्मारिका का प्रकाशन होगा। 18 अक्टूबर को विशाल शोभायात्रा आर्यसमाज से प्रातः प्रारम्भ होकर अनेक ग्रामों में भ्रमण के साथ सायं आर्यसमाज में ही समाप्त होगी। - *मन्त्री*

गार्गी कन्या गुरुकुल में श्रावणी एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न

गार्गी कन्या गुरुकुल भैया चामड़ अलीगढ़ में 20 अगस्त को श्रावणीपर्व हर्षोल्लासपूर्वक मानया गया। यज्ञ के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों से आयी हुई 15 विद्याभिलाषिनी नवीन ब्रह्मचारिणियों का यज्ञोपवीत एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। गुरुकुल के संस्थापक पूज्य स्वामी चेतन देव जी महाराज ने ब्रह्मचारिणियों एवं अभ्यागतों का अपने सारगर्भित वक्तव्य से मार्गदर्शन किया। - *प्राचार्या*

शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षण शिविर

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद, बिजनौर के प्रांगण में मुख्याधिकारी आचार्या प्रियम्वदा वेदभारती जी के नेतृत्व में 18 से 28 जुलाई 2013 तक 'शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षण शिविर' का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

इस अवसर पर समस्तीपुर बिहार से पधारे आर्य भजनोपदेशक संगीताचार्य पं॰ दयानन्द सत्यार्थी द्वारा कन्याओं को स्वर-साधना का शास्त्रीय संगीत के माध्यम से सम्यक् अभ्यास कराया गया।

भजन-गायन के साथ-साथ सरगम, तान, अलाप, आरोह-अवरोह, तराना, नोम तोम, तन नन घीं तनन, सम शून्य खाली पकड़ आदि का ज्ञान कराते हुए तीन ताल का पूर्ण अभ्यास कराया गया तथा सुगम संगीत की भी शिक्षा दी गयी। - *आचार्या*

शोक समाचार

पं. विश्वदेव शास्त्री का निधन

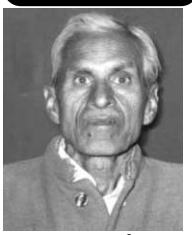

आर्यसमाज के जाने-माने वैदिक विद्वान पं. विश्वदेव शास्त्री जी का दिनांक 16 सितम्बर, 2013 को 83 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। वे गुरुकुल गौतम नगर के प्रारम्भिक स्नातकों में से एक वैदिक विद्वान् थे। वे वेद, दर्शन, व्याकरण आदि शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन में जीवन के प्रारम्भ से अन्त तक प्रवृत्त रहे।

आर्ष गुरुकुल टटेसर जौन्ती दिल्ली में वे 5 वर्ष आचार्य तथा 5 वर्ष उपाचार्य पद पर रहे। गुरुकुल सर्वदानन्द साधु आश्रम अलीगढ़ तथा गुरुकुल दयानन्द वेद विद्यालय में वे उपाचार्य पद पर रहे इसके अतिरिक्त विभिन्न गुरुकुलों में भी वे पढ़ाते रहे। अपने जीवन के अन्तिम चरण में भी वे लगभग डेढ़ वर्ष में श्रीमद् दयानन्द आर्ष गुरुकुल छोटा खेड़ा में विरक्त जीवन बिताते हुए अपनी निर्मल विद्या को ब्रह्मचारियों में वितरित करते रहे। अपनी आजीविका के लिए छापेखाने का व्यवसाय भी किया तो उसे नाम दिया 'वैदिक प्रेस', जो अपने उत्तम मुद्रण के लिए आर्यजगत् में भलीभांति जाना जाता है। **श्रद्धांजलि सभा 27 सितम्बर, 2013 उनके निवास 4/580, वैशाली गाजियाबाद में प्रातः 10 से 3 बजे तक आयोजित की जाएगी।**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2012 दिल्ली के अवसर पर घोषित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-डरबन (दक्षिण अफ्रीका)

(विश्व वेद सम्मेलन) 28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013

आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली** एवं **आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका** के तत्त्वावधान में इस वर्ष **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013 को द. अफ्रीका की राजधानी डरबन में** सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए अनेक देशों के प्रतिनिधि डरबन पहुंच रहे हैं। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु बड़ी संख्या में आर्यजन पहुंचेंगे। सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से भाग ले सकेंगे। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही द. अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा अपने यहां प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था करेगी।** अनेकों आर्यजन डरबन सम्मेलन के इस अवसर पर दक्षिण अफ्रीका महाद्वीप का भ्रमण भी करना चाहते हैं, इस कारण उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए डरबन के अतिरिक्त द. अफ्रीका के अन्य स्मरणीय एवं महत्त्वपूर्ण शहरों की यात्रा का भी कार्यक्रम बनाया गया है। आवेदन की **अन्तिम तिथि 30 सितम्बर, 2013 तक बढ़ा दी गई है।** अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - **श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, यात्रा संयोजक - 09824072509**

भव्य दक्षिण अफ्रीका यात्रा नं. 1 (15 रत्रि 16 दिन)

19 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 2013

प्रस्थान : दिनांक 19 नवम्बर की मध्यरात्रि को मुम्बई/दिल्ली से जोहान्सबर्ग, द. अफ्रीका हेतु प्रस्थान (मुम्बई से 20 नवम्बर को 02:05 बजे तथा दिल्ली से 20 नवम्बर को 0:45 बजे) **वापसी :** दिनांक 3 दिसम्बर को डरबन से भारत।

उक्त यात्रा में सनसिटी, जोहान्सबर्ग, केपटाउन, नाइसना तथा डरबन के सभी महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों को दिखाया जाएगा। यात्रा की **कुल राशि प्रति व्यक्ति 1,85,000/- रु0 (मुम्बई से)** तथा **1,90,000/- रु. (दिल्ली से)** होगी।

भव्य दक्षिण अफ्रीका यात्रा नं. 2 (7 रत्रि 8 दिन)

27 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 2013

प्रस्थान : दिनांक 27 नवम्बर की मध्यरात्रि को मुम्बई/दिल्ली से जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका हेतु प्रस्थान (मुम्बई से 28 नवम्बर को 02:05 बजे तथा दिल्ली से 28 नवम्बर को 0:45 बजे) **वापसी :** दिनांक 3 दिसम्बर को डरबन से भारत

केवल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने वाले सभी आर्य बन्धुओं को डरबन में 1.5 दिन भ्रमण भी कराया जाएगा। इस यात्रा की **कुल व्यय राशि मुम्बई से 90,000/- रुपये** तथा **दिल्ली से 95,000/- रुपये प्रति व्यक्ति होगी।**

निश्चित की गई राशि में हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय तथा डोमैस्टिक टिकटें, वीजा, बीमा (75 वर्ष तक), सभी स्थानों पर आने-जाने की वाहन व्यवस्था, नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकट, मिनरल वाटर आदि के सभी खर्चे शामिल हैं। केवल बस ड्राइवर को दी जाने वाली टिप सम्मिलित नहीं है।

विस्तृत जानकारी/यात्रा विवरण/आवेदन पत्र हमारी वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलॉड किए जा सकते हैं।

पृष्ठ 3 का शेष

गया। हम चींटी मारना भी हिंसा व पाप मानते हैं किन्तु अज्ञानता व अन्धविश्वास में पशुबलि, मानव बलि भी धर्म हो जाती है, यह कैसा मजाक है? इन सबके पीछे अज्ञान और अन्ध श्रद्धा है।

वस्त्र, दाढ़ी और आश्रमों से, सफेद या रंगीन कपड़ों से, किसी की सन्त संन्यासी की पहचान नहीं होती है। यह तो बाहरी रूप है जो एक बहरूपिया भेषधारी भी कर सकता है।

संन्यासी के बारे में गीता में कहा-

"ज्ञेयः स नित्यं संयासी योन द्वेष्टा न कांछति।"

इच्छाओं से ऊपर द्वेष भाव को त्याग करने वाला संन्यासी होता है। इस देश में सन्त हुए महावीर, नानक, कबीर, बुद्ध, दयानन्द जिन्होंने भौतिकता को साधनों से दूर रहकर उन्हें त्यागकर त्यागमय जीवन व्यतीत कर सज्जन महापुरुषों का आदर्श स्थापित किया। भौतिक सम्पत्ति से उनकी पहचान नहीं बनी, बड़े आश्रमों के कारण उनका परिचय नहीं हुआ, करोड़ों भक्तों की भीड़ के कारण उनको समाज ने स्थान नहीं दिया। उनके, चरित्र, पवित्र नैतिकता प्रधान जीवन शैली और विद्वत्ता के कारण समाज में उनकी पहचान बनी।

हम मनुष्य हैं, और मनुष्य वही कहलाने का अधिकारी है, यास्काचार्य के शब्दों में - **"ये मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति ते मनुष्याः"** अर्थात् जो किसी भी कार्य के पूर्व सोचविचार कर निर्णय लेता है वह मनुष्य है। बहुत ही विनम्र के साथ कहना पड़ रहा है कि चोले से तो मनुष्य है लेकिन मनुष्यता से दूर है। एक कहावत है **"बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय"**

इसलिए समाज को जिस प्रकार से वह कोई वस्तु खरीदने के पूर्व भलिभांति उसकी उपयोगिता उसके गुण-दोष और कीमत का मूल्यांकन करके खारीदता है उसी प्रकार किसी भी विचार या महापुरुष के प्रति अपनी आस्था सोच-समझकर व्यक्त करनी चाहिए उसका अनुसरण तभी करना चाहिए। किन्तु धर्म के बारे में, ईश्वर के बारे में, सन्त महात्माओं के बारे में हम इस पर ध्यान नहीं देते हैं। इसीलिए हम गलत लोगों के चक्कर में फंस जाते हैं, गलत मान्यताओं में उलझ जाते हैं। धर्म को और धार्मिक व्यक्ति को सोच समझकर स्थान देना जीवन के लिए लाभदायक है और बिना सोचे समझे मान्य करना पाखण्ड, आडम्बर और अधर्म को प्रोत्साहित करना है। गुरु परम्परा में गुरुडम फल-फूल रहा है, अन्धे दिखा रहे हैं। यथायोग्य योग्यतानुसार सम्मान तो सबको देना चाहिए परन्तु उसके अनुचित कार्यों को अनदेखा कर उसको मानना घोर अन्याय है, पाखण्ड है, अपना पतन है। अरे, सबका गुरु आदि गुरु तो पूर्ण ज्ञान का भण्डार परमपिता परमात्मा है।

योगदर्शन में कहा-

"स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनान वच्छेदात्।"

वह परमात्मा सबसे पहला आदि गुरु है जो समय के बन्धन में नहीं आता। बिना सोचे अपने विवेक का उपयोग किए बिना किसी विचार को मानना ठीक नहीं हैं। इसी वृत्ति के कारण आज धर्म के नाम पर अधर्म फैल रहा है।

- इन्दौर रोड, महू (म.प्र.)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा का

आर्य वीर प्रान्तीय महा सम्मेलन

12-13 अक्टूबर, शनिवार-रविवार, 2013

स्थान : अग्रवाल पब्लिक स्कूल, तिगाँव रोड, सेक्टर-3, बल्लबगढ़ (फरीदाबाद)

इस अवसर पर आचार्य बलदेव जी महाराज प्रधान सार्वदशिक सभा, डा॰ स्वामी देवव्रत सरस्वती प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्यवीर दल, आचार्य विजयपाल जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, डा॰ राम प्रकाश जी सांसद एवं कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, ब्र॰ राजसिंह आर्य प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, डा॰ धर्मवीर मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर, डा॰ राजेन्द्र विद्यालंकार मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल, डा॰ सुरेन्द्र कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, डा॰ योगानन्द शास्त्री स्पीकर दिल्ली विधान सभा, श्री विनय आर्य महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, मदनमोहन आर्य उप संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल, आचार्या दर्शना कन्या गुरुकुल खरल एवं अनेक विद्वान्, संन्यासी, राजनीतिक एवं सामाजिक नेताओं को आमन्त्रित किया गया है। कार्यक्रम इस प्रकार है-

12 अक्तूबर, 2013 (शनिवार)		13 अक्तूबर, 2013 (रविवार)	
संस्कृति रक्षा सम्मेलन:	प्रात: 10 बजे	सामूहिक शाखा	: प्रात: 6 बजे
ध्वजारोहण	: दोपहर 1 बजे	यज्ञ एवं प्रवचन	: प्रात: 8 बजे
शोभा यात्रा	: दोपहर 1:30 बजे	राष्ट्र रक्षा सम्मेलन	: प्रात: 10 बजे
आर्यवीर सम्मेलन	: रात्रि 8 बजे	व्यायाम प्रदर्शन	: दोपहर 1 बजे

सम्मेलन में हरियाणा के अतिरिक्त दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि स्थानों से भारी संख्या में आर्य वीर, वीरांगनाएं, आर्य भाई बहनें तथा गुरुकुलों के ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणियां पधारेंगे। अत: आप सभी से निवेदन है कि आप अपनी गरिमामयी उपस्थिति के साथ तन-मन-धन का सहयोग प्रदान करें। - ***वेद प्रकाश आर्य, मन्त्री***

डॉ॰ मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर 'डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार' उस विद्यार्थी को दिया जाएगा जिसे योगदर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व अर्थ सहित कंठस्थ होंगे।

जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना नाम अपने गुरुकुल के आचार्य के माध्यम से टंकारा गुरुकुल के आचार्य को शीघ्र भेज दें। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी करे पांच हजार रुपये नकद व स्मृति चिह्न से पुरस्कृत किया जाएगा। जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

श्री आचार्य रामदेव, श्रीमहर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
राजकोट - 363650 (गुजरात) दूरभाष : 02822-287756

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 23 सितम्बर, 2013 से रविवार 29 सितम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 26/27 सितम्बर, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 25 सितम्बर, 2013

प्रतिष्ठा में,

सोमवार 7 अक्तूबर से 12 अक्तूबर, 2013

यज्ञ-भजन : प्रात: 6:30 से 9 बजे रामकथा : रात्रि 7 से 9:30 बजे

वेद मन्दिर सेवा आश्रम का शिलान्यास एवं पूर्णाहुति

12 अक्तूबर, प्रात: 8 से 12 बजे

ऋषि लंगर : 12:30 बजे

निवेदक : राजसिंह आर्य, प्रधान (9350077858)

पृष्ठ 5 का शेष

इस चिकित्सालय को दो डॉक्टरों की सेवाएं अपने संस्थान की ओर से प्रदान करने का आश्वासन भी दिया।

सभा के वरिष्ठ उप प्रधान एवं लक्ष्मी एलिजाबेथ ट्रस्ट के मन्त्री श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा कि इस चिकित्सालय निर्माण के तीसरे चरण में ही इस चिकित्सालय में सुन्दर यज्ञशाला के निर्माण का भी प्रावधान है।

इस पर निगम पार्षद श्री देवेन्द्र कुमार (पौनी पहलवान) ने यज्ञशाला के निर्माण की पूर्ण जिम्मेदारी ली तथा इसके लिए तुरन्त 11 हजार रुपये की राशि प्रदान करते हुए प्रतिवर्ष 11 हजार रुपये चिकित्सालय को देने का आश्वासन दिया।

पूर्व निगम पार्षद चौधरी ईश्वर सिंह जी ने अपने पूज्य पिता की स्मृति में एक लाख रुपये की राशि प्रदान की।

इस अवसर पर ग्रामीण महिलाओं ने हरियाणवी बोली में महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज को समर्पित गीत प्रस्तुत किए।

इस दिन जहां एक ओर चिकित्सालय का उद्घाटन एवं आर्य सम्मेलन का आयोजन हो रहा था, वहीं दूसरी ओर लॉयन्स क्लब की ओर से नेत्र जांच शिविर भी लगाया गया था जिसमें लगभग 350 लोगों ने अपने नेत्रों की जांच करवाई और लगभग 35 लोगों की आंखों के ऑपरेशन किए गए।

विधायक श्री सुरेन्द्र कुमार जी ने 60 हजार रुपये की राशि प्रदान करते हुए अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि दिल्ली सरकार की ओर से जो भी मदद सम्भव होगी इस चिकित्सालय को उपलब्ध कराने का प्रयास करूंगा और निजी तौर पर भी समय-समय पर जो भी आवश्यकताएं होंगी उसके लिए भी तत्पर रहूंगा।

समारोह में ग्रामीण दिल्ली के सभी गांवों – बवाना, दरियापुर, पूठ, कराला, घोघा, बेगमपुर, नरेला, बांकनेर, दौलतपुर, शाहबाद, नया बांस, इब्राहिमपुर, ,खेड़ा खुर्द, अलीपुर आदि से सैंकड़ों की संख्या में आर्यजन पधारे हुए थे। इसी के साथ साथ नई दिल्ली क्षेत्र के अनेक आर्यजन एवं संस्थाओं के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित थे।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर